SKU शोध संचार

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

अंक-3, खण्ड-1, जनवरी - मार्च 2025 E-ISSN : 2584-2900

लोककला बनाम शास्त्रीय कला : भारतीय संदर्भ में अध्ययन

भक्ति अग्रवाल

सहायक प्राध्यापक (ललितकला)

आलोक अग्रवाल

सहायक प्राध्यपक (पत्रकारिता)

श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

सारांश

भारतीय कला को दो प्रमुख श्रेणियों लोककला और शास्त्रीय कला में विभाजित किया जा सकता है। लोककला आम जनता की संस्कृति से उत्पन्न होती है और सामाजिक परंपराओं से प्रभावित होती है, जबकि शास्त्रीय कला शास्त्रों और सिद्धांतों पर आधारित होती है। यह शोध पत्र इन दोनों कला शैलियों की विशेषताओं, अंतर, सामाजिक प्रभाव और आधुनिक परिप्रेक्ष्य में इनके अस्तित्व का विश्लेषण करता है।

कुजीभूत शब्द

भारतीय कला, लोककला, शास्त्रीय कला, चित्रकला, मूर्तिकला।

1. प्रस्तावना

भारत अपनी विविध सांस्कृतिक परंपराओं और समृद्ध कला विरासत के लिए प्रसिद्ध है। यहां कला के दो प्रमुख रूप देखे जाते हैं–लोककला (Folk Art) और शास्त्रीय कला (Classical Art)। लोककला किसी विशिष्ट समाज या क्षेत्र की परंपराओं, धार्मिक आस्थाओं और सांस्कृतिक धरोहर से प्रेरित होती है, जबकि शास्त्रीय कला नियमबद्ध संरचनाओं, तकनीकी उत्कृष्टता और विशिष्ट गुरुकुल परंपरा से विकसित होती है। इस शोध पत्र का उद्देश्य लोककला और शास्त्रीय कला के बीच के अंतर को स्पष्ट करना और यह समझना है कि दोनों का भारतीय समाज में क्या महत्व है।

2. लोककला: परिभाषा और विशेषताएँ

लोककला आम जनता द्वारा विकसित कला शैली है, जो पारंपरिक, सहज और सरल होती है। यह पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप से या व्यावहारिक रूप से संचारित होती है।

लोककला के प्रमुख तत्व

1. स्थानीयता: यह किसी विशिष्ट क्षेत्र की संस्कृति, परंपराओं और धार्मिक मान्यताओं से जुड़ी होती है।
2. सहजता: इसे औपचारिक प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि यह पारंपरिक रूप से सीखी जाती है।
3. प्राकृतिक रंग एवं सामग्री: आमतौर पर मिट्टी, कपड़ा, लकड़ी और प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया जाता है।
4. थीम एवं विषयवस्तु: धार्मिक कथाएँ, लोकगाथाएँ, प्रकृति, ग्रामीण जीवन और देवी-देवताओं का चित्रण होता है।

लोककला के प्रमुख प्रकार

1. मधुबनी चित्रकला (बिहार)
2. वारली पेंटिंग (महाराष्ट्र)
3. फड़ चित्रकला (राजस्थान)
4. गोंड कला (मध्य प्रदेश)
5. पटचित्र कला (ओडिशा और पश्चिम बंगाल)
6. कालीघाट पेंटिंग (पश्चिम बंगाल)

3. शास्त्रीय कला: परिभाषा और विशेषताएँ

शास्त्रीय कला उन कलाओं को कहा जाता है, जो परंपरागत रूप से विकसित हुई हैं और जिनका आधार किसी न किसी कला शास्त्र पर टिका होता है। यह एक विधिवत प्रशिक्षण प्रणाली के तहत सीखी जाती है और इसमें तकनीकी उत्कृष्टता का विशेष महत्व होता है।

शास्त्रीय कला के प्रमुख तत्व

1. नियमबद्धता: यह शास्त्रों (जैसे नाट्यशास्त्र, शिल्पशास्त्र) पर आधारित होती है।
2. तकनीकी श्रेष्ठता: कलाकारों को वर्षों की साधना एवं प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।
3. सौंदर्यशास्त्र (Aesthetics): यह कला गहरी भावनात्मक और आध्यात्मिक अनुभूति प्रदान करती है।
5. राजसी एवं धार्मिक संरक्षण: ऐतिहासिक रूप से यह कला शाही संरक्षण या मंदिरों से प्रायोजित होती थी।

शास्त्रीय कला के प्रमुख प्रकार

1. चित्रकला

अजंता-एलोरा की गुफा चित्रकला

मुगल, राजपूत और मैसूर शैली की चित्रकला

2. मूर्तिकला

खजुराहो और कोणार्क मंदिर की मूर्तिकला

गांधार, मथुरा और अमरावती स्कूल की मूर्तिकला

3. संगीत एवं नृत्य

शास्त्रीय संगीत (एवं कर्नाटक हिंदुस्तानी)

शास्त्रीय नृत्य (भरतनाट्यम, कथक, कथकली, कुचिपुड़ी)

4. लोककला और शास्त्रीय कला के बीच अंतर

विशेषता	लोककला	शास्त्रीय कला
शिक्षा एवं प्रशिक्षण	पारंपरिक एवं अनौपचारिक	औपचारिक शिक्षा एवं गुरू शिष्य परंपरा
सामाजिक वर्ग	ग्रामीण एवं स्थानीय समुदायों द्वारा विकसित	राजसी संरक्षण प्राप्त या विद्वानों द्वारा विकसित
तकनीकी जटिलता	सरल एवं सहज	तकनीकी रूप से जटिल
विषय वस्तु	धार्मिक, लोकगाथाएं, ग्रामीण जीवन	दार्शनिक, आध्यात्मिक, पौराणिक विषय
प्रसार माध्यम	पारंपरिक एवं मौखिक	लिखित ग्रंथों एवं शास्त्रों पर आधारित

5. आधुनिक संदर्भ में लोककला और शास्त्रीय कला

आज के डिजिटल युग में लोककला और शास्त्रीय कला दोनों को नई पहचान मिल रही है। लोककला का विकास हस्तशिल्प मेले, ऑनलाइन बिक्री, सरकारी संरक्षण (जैसे "हुनर हाट" और "खादी ग्रामोद्योग") से हो रहा है। वहीं शास्त्रीय कला का प्रभाव संगीत और नृत्य संस्थानों, डिजिटल प्लेटफॉर्म (यूट्यूब, ऑनलाइन क्लासेज) और अंतरराष्ट्रीय महोत्सवों के कारण बढ़ रहा है।

हालांकि, वैश्वीकरण के कारण लोककला के कई रूप विलुप्त होने की कगार पर हैं, जबकि शास्त्रीय कला को भी नई पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए नवाचार की आवश्यकता है।

6. निष्कर्ष

भारतीय लोककला और शास्त्रीय कला दोनों अपनी-अपनी विशेषताओं के कारण महत्वपूर्ण हैं। लोककला समाज की जड़ों से जुड़ी होती है और लोगों की सामूहिक अभिव्यक्ति को दर्शाती है, जबकि शास्त्रीय कला गहरी साधना और उच्च तकनीकी कौशल पर आधारित होती है। वर्तमान समय में इन दोनों कलाओं को संरक्षित करने और आधुनिक संदर्भ में पुनर्परिभाषित करने की आवश्यकता है।

SKU SHODH SANCHAR शोध संचार

7. संदर्भ

1. कोठारी, सुनील (2004). "भारतीय नृत्य और संगीत" नेशनल बुक ट्रस्ट, भारत।
2. वर्मा, आर. (2012). "भारतीय चित्रकला: परंपरा और विकास" राजकमल प्रकाशन।
3. चक्रवर्ती, संजय (2018). "लोककला और आधुनिक भारत" साहित्य अकादमी।
4. गुप्ता, पी. (2020). "भारतीय मूर्तिकला के शास्त्रीय आयाम" ओक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।